एग्री आर्टिकल्स
(कृषि लेखों के लिए ई-पत्रिका)
वर्ष: 03, अंक: 05 (सितम्बर-अक्टूबर, 2023)
www.agriarticles.com पर ऑनलाइन उपलब्ध
© एग्री आर्टिकल्स, आई. एस. एस. एन.: 2582-9882

लाख का प्राचीन इतिहास एवं लाख उत्पादन का महत्व

(*हर्षित गुप्ता एवं डॉ. समीर कुमार सिंह)
आचार्य नरेंद्र देव कृषि एवं प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय, कुमारगंज, अयोध्या (उ०प्र०)
*संवादी लेखक का ईमेल पता: gupta.harshit203@gmail.com

लाख, या लाह संस्कृत के 'लाक्षा' शब्द से व्युत्पन्न समझा जाता है। संभवत: लाखों कीड़ों से उत्पन्न होने के कारण इसका नाम लाक्षा पड़ा था। वैदिक काल से लाख कीड़े और उसके मेजबान पौधे का वर्णन- बटिया मोनोस्पर्म (लाक्षारु) अथर्ववेद में दर्ज है। महाभारत में यह भी उल्लेख किया गया है कि कौरवों ने लाक्षागृह को आग लगाकर पांडवों को शारीरिक रूप से खत्म करने के मकसद से अत्यधिक ज्वलनशील लाखगृह (लाख घर) का निर्माण किया था।

लाख एक प्राकृतिक राल है बाकी सब राल कृत्रिम हैं। इसी कारण इसे 'प्रकृति का वरदान' कहते हैं, लाख के कीड़े अत्यन्त छोटे होते हैं तथा अपने शरीर से लाख उत्पन्न करके हमें आर्थिक सहायता प्रदान करते हैं। वैज्ञानिक भाषा में लाख को 'लेसिफर लाखा' कहा जाता है।

'लाख' शब्द की उत्पत्ति संस्कृत के 'लक्ष' शब्द से हुई है, संभवतः इसका कारण मादा कोष से अनगिनत (अर्थात् लक्ष) शिशु निकलते है, लगभग 340000 कीडो से 1 किग्रा. रंगीन लाख तथा 140000 लाख कीडो से 1 किग्रा. कुसुमी लाख पैदा करते हैं।

भारत में लाख उत्पादन - संछिप्त परिचय

लाख हेतु मुख्य पोषक वृक्ष लाख की खेती, लाख कीड़े बीहन लाख भारत में फसलों की खेती के साथ-साथ लाख कीड़े का पालन भी बडे पैमाने पर किया जाता है।

कीडो की खेती में मुख्यतः मधुमक्खी पालन, रेशम पालन और लाख कीड़े की खेती प्रमुख है, लाख कीड़े का पालन थोड़ा तकनीकी ज्ञान के साथ सीमित समय में आसानी से किया जा सकता है।

कच्चे लाख उत्पादन की स्थिति

भारत 20,000 लाख टन के वार्षिक उत्पादन के साथ, कच्चे लाख के उत्पादन के मामले में दुनिया भर में पहला लाख उत्पादक देश है। दुनिया के कुल उत्पादन का लगभग 80 प्रतिशत लाख भारत में है और इसका 75 प्रतिशत मुख्य रूप से संसाधित और अर्ध-संसाधित रूपों में सौ से अधिक देशों को निर्यात किया जाता है।

भारत के बाद, थाईलैंड में लाख का उत्पादन अधिक होता है। इनके साथ-साथ इंडोनेशिया, चीन, म्यांमार, फिलीपींस, वियतनाम और कंबोडिया आदि के कुछ हिस्सों में भी लाख का उत्पादन किया जाता है। भारत में, मुख्य रूप से झारखंड राज्य के छोटा नागपुर क्षेत्र, छत्तीसगढ़ राज्य,मध्य प्रदेश,महाराष्ट्र, ओडिशा,पश्चिम बंगाल और उत्तर प्रदेश में लाख का उत्पादन होता है।

बढ़ते राज्यों के अलावा, झारखंड राज्य पहले स्थान पर है, इसके बाद छत्तीसगढ़, मध्य प्रदेश, महाराष्ट्र और ओडिशा हैं, इन पांच राज्यों का राष्ट्रीय उत्पादन में योगदान क्रमशः 53%, 17%, 12%, 8% और 3%, है। राष्ट्रीय लाख उत्पादन का लगभग 93% उत्पादन इन 5 राज्यों से ही होता है।

लाख उत्पादन के लिए पौधे व उनकी उपयुक्तता

जिन पौधों पर लाख का कीड़ा पलता है उन्हें पोषक वृक्ष कहते है। लाख उत्पादन के लिए गर्म व अल्पादरा क्षेत्र प्रयुक्त होते हैं, परंतु क्षेत्र में प्रचुर मात्रा में लाख के पोसी पौधों का होना आवश्यक है, ताकि मौसम के अनुरूप उन पर लाख के कीड़े स्थापित किया जा सके।

कुसुम वृक्षों पर पलने वाले कुसमी लाख तथा पलाश,पीपल,वर,गोट व अन्य पोषक वृक्षों पर पलने वाले रंगिणी लाख कहलाती है। कुसमी लाख कुसुम के अलावा खैर,बर,बलिया व गलवांग पर भी पाल जाती है, रंगिणी लाख कुसमी की तुलना में निम्न कोटि की होती है।

लाख की प्रमुख किस्म तथा उनके पोषक वृक्ष निम्न तालिका में दिए गए हैं।

लाख की किस्म	फसल चक्र	वीहन लाख का संचरण	पोषक वृक्ष	फसल कटान
रंगीनी	कटकी	जून, जुलाई	पलाश	अक्टूबर, नवम्बर
रंगीनी	बैसाखी	अक्टूबर	पलाश, घोंट	जून जुलाई
कुसमी	अगहनी	जून, जुलाई	कुसुम समीलता, बेर	जनवरी, फरवरी
कुसमी	जठकी	जनवरी, फरवरी	कुसुम	जून, जुलाई

लाख उत्पादन

कुसुम के वृक्षों पर पलने वाली हल्के रंग की लाख की किस्म कुसमी कहलाती है। कुसमी के अलावा इस किस्म के कीड़े खैर, बलिया,गर्ल,वांग,वाबीर पर भी पल जाते हैं, फसल 5 से 6 महीने में पकती है। अधिक लाल रंग की लाख पैदा करने वाले कीड़े की किस्म रंगीली कहलाती है, यह कुसमी की अपेक्षा निम्न कोटि की होती है। यह पलाश,पीपल,बेलघाट आदि पोषक वृक्षों पर पलती है।

लाख उत्पादन के लिए चयनित क्षेत्रों में प्रचुर मात्रा में लाख के पोषक वृक्षों का होना आवश्यक होता है, उचित स्थानों पर इन पौधों का रोपण भी किया जा सकता है। कीड़ों की शाखाएं भ्रूण लाख को नई काफी शाखाओं पर जुलाई से अक्टूबर तक स्थापित किया जा सकता है, कीड़ों के निकलने से 7 दिन के अंदर ही लाख की दल का उत्पादन शुरू हो जाता है। भारत में लाख उत्पादन क्षेत्रों से 20-25% लाख के पेड़ों का ही उपयोग किया जा रहा है।

लाख के रूप

लाख उत्पादन के कार्य

अधिक उत्पादन हेतु पोषक वृक्षों की काट-छाट, नयी और रसदार शाखायें लाख के कीड़ों के भोजन के लिये उपयुक्त होती है। इसलिये समय-समय पर पोषक वृक्षों की काटछाट आवश्यक होती है, छटाई से पुरानी टहनियों को काटकर अधिक नयी और मुलायम टहनिया प्राप्त की जाती है।

छटाई हमेशा हल्की करनी चाहिये सामान्यत 25 सेमी (अगूठे से अधिक व्यास से अधिक) शाखाओं की छटाई नहीं करनी चाहिये । अधिक छोटी शाखाओं (जिनका व्यास 125 सेमी से कम हो) को उत्पत्ति के स्थान से काट देना चाहिये । रंगीनी लाख हेतु पलाश के वृक्ष छटाई के 6 महीने उपरान्त तथा कुसुमी लाख हेतु कुसुम के वृक्ष एक-डेढ़ वर्ष बाद अच्छी लाख की फसल प्राप्त करने हेतु योग्य होते हैं । कुसुम की छटाई जनवरी-फरवरी और जून-जुलाई में की जाती हैं तथा पलाश व बेर की छटाई फरवरी से अप्रैल माह में की जाती हैं ।

पोषक वृक्षों की काट छांट के लाभ

» अच्छी स्वस्थ तथा रस से भरी कोमल शाखाओं की प्रचुर मात्रा में उपलब्धता को सुनिश्चित करना जिस पर लाख उत्पादन किया जा सके ।

» नई कोपलों को बढ़ावा देने से पौधों की क्षमता को बनाए रखना ।

» मृत अस्वस्थ तथा टूटी शाखाओं को हटाना ।

नई फसल प्राप्त करने के लिए कीडों को पोषक पौधों पर स्थापित करना

कृत्रिम संचरण द्वारा बीहन लाख को नयी-नयी पोषक पौधों पर सुतली से बाध दिया जाता है । मीटर बीज लाख (ब्रूड लाख) 25 मीटर टहनियों के लिये पर्याप्त होती है, वृक्ष पर बीहन लाख को इस तरह से बाधा जाना चाहिए कि उससे निकलने वाले लाख पर बडल आस-पास की टहनियों पर सप्ताह में अधिक वृक्ष पर नहीं छोड़ना चाहिए अधिक समय तक रहने से लाख के शत्रु कीटों की सम्भावना बढ़ जाती है ।

प्रयोग किए जा चुकी कीड़ों की शाखाओं को हटाना

पुरानी लाख को वृक्ष पर छोड़ देने से उसमे कीडे निकलकर वृक्षी की डाल पर बैठ जाते है । इसे अपनाने की सलाह नहीं दी जाती क्योंकि पोषी शाखाये उस स्थान पर कमजोर हो जाती है , तथा लाख के शत्रु कीड़े बढ़ने की सम्भावना बढ़ जाती है । इन पुरानी शाखाओं के हटाने से लाख के कीड़ों के परभक्षियों व परजीवियों की रोकथाम भी होती है ।

फसल काटने का उचित समय

फसल को पूरी तरह पकने से पहले नहीं काटना चाहिये । मादा लाख के कीट आजीवन लाख बनाते रहते हैं । अच्छी लाख पैदावर के लिये कीड़ो के बाहर निकलने के समय तक लाख की फसल को वृक्ष पर ही लगे रहने देना चाहिये । परभक्षी प्रबंधन व कीटनाशकों का छिड़काव यदि आवश्यक हो तो परभक्षी कीटो से बचाव के लिये कीट नाशकों का छिड़काव सावधानी से किया जा सकता है । बूड लाख को एक सप्ताह से अधिक स्टोर नहीं किया जा सकता है, इससे उत्पादन की दर कम होती है ।

अन्य कारक जैसे निम्न न्यूनतम समर्थन मूल्य मेजबान वृक्ष की उपलब्धता या अतिरिक्त वृक्षारोपड़ कम मूल्य संवर्धन आदि लाख के उत्पादन को प्रभावित करते हैं । लाख का कीड़ा और मेजबान पेड़ो के क्षेत्र भंडार जर्मप्लाज्म बैंक को विकसित करने के लिए बुनियादी ढांचा लाख की खेती के लिए एक चुनौती है ।

पौधशाला जल प्रबंधन खरपतवार नियंत्रण नर्सरी बढ़ाने और रोपाई के साथ-साथ मेजबान पौधों की छटाई बूड लाख कीटो का टीकाकरण नियंत्रण के उपाय और कटाई आदि में हितधारको (लाभार्थियो/किसानों/कृषकों का उचित प्रशिक्षण भूमि और पारिस्थितिकी तंत्र प्रबंधन के इस सतत सर्वोत्तम अभ्यास को उचित रूप से अपनाने के लिए आवश्यक है ।

प्रशिक्षण संस्थान

1. भारतीय लाख अनुसंधान संस्थान- नामकुम, रांची
2. भारतीय वानिकी अनुसंधान और शिक्षा परिषद (आईसीएफआरई) - देहरादून, उत्तराखंड
3. राज्य वन अनुसंधान संस्थान- जबलपुर, मध्य प्रदेश

लाख उत्पादन से लाभ

» वनों के आसपास रहने वाले समुदायों के लिए समर्पित आय का साधन

» समुदाय आधारित सबंधित भूमिव पारितंत्र प्रबंधन को बढ़ावा, तथा स्थानीय विविधता संरक्षण बढ़ा

लाख संवर्धन का अर्थशास्त्र

एक उच्च संभावित आय सृजन के साथ लाख एक उच्च पारिश्रमिक फसल है । 15 मेजबान पेड़ों के साथ लाख उत्पादक का शुद्ध लाभ लगभग 15000 रुपये सालाना जाता है

निष्कर्ष

प्रस्तुत पाठ लाख की खेती में उपयोगी कौशल को उजागर करने और आवश्यकता पर प्रकाश डाला गया है जो कि लाख संस्कृति के बारे में सतही विचार प्राप्त करने में सहायक होगा। वर्तमान निष्कर्षों का परिणाम न केवल लाख की खेती के दौरान लाख कीटों के जीवन स्तर को समझने में मदद करेगा, बल्कि देश में लाख की खेती के साथ-साथ लाख उत्पादकता बढ़ाने के लिए उपयुक्त लाख मेजबान पौधे की आबादी बढ़ाने के लिए क्षेत्र में एक अवसर प्रदान करेगा । पर्यावरणीय जैव विविधता को संरक्षित करने के लिए लाख की खेती आज के समय की जरूरत है ।